विप्रा जटावल्कलसंवृतः
भस्मोद्धूलितसर्वांगस्त्रिपुण्ड्रांकितमस्तकः।
रुद्राक्षमालाभरणः सितयज्ञोपवीतवान्
पराशरोनाम मुनिराज॥
- स्कन्द पुराण, ब्रह्म खण्ड ३

'रक्षाम्येनं द्विजं बालं फुल्लेन्दीवरलोचनम्'
अर्थात - मैं इस ब्राह्मण की (पराशर की) रक्षा करूँगा,
जिसके नेत्र पूर्ण खिले हुए नील कमल के समान हैं।
- भगवान नीललोहित, शिव शम्भु

भक्तिभावेन विंदामि पूजयामि सुभावतः॥६५॥
यं यं त्वं वांछसे कामं तं तं प्राप्स्यसि नान्यथा ।
सर्वकामप्रसिद्धस्त्वं स्वत एव भविष्यसि ३१।
अर्थात - भक्तिभाव से जो कोई भी इस (पराशरसर) की
शरण में जाता है तथा इसका पूजन करता है,
वह आत्मिक सुख (प्रसन्नता) तथा यश-कीर्ति को
प्राप्त करता है। जो-जो तुम चाहोगे, वो-वो तुम प्राप्त करोगे,
इसमें कोई सन्देह (अन्यथा विचार) नहीं होना चाहिए।
(इस सर का दर्शन तथा पूजन करने से) तुम्हारी
सभी कामनाएँ स्वतः पूर्ण हो जाएंगी।
पराशरसर

ातपस्वी मुनि पराशर
मलयमिव चन्दन शिशिरवनम्।
अतिमनोहरमाहलादनं दृष्टेः, पराशरनाम सरो दृष्टवान् ॥
अर्थात - मलयपर्यत में जिस प्रकार शीतल चन्दन वन है,
इस सरोवर में भी उसी प्रकार शीतल जल विद्यमान है।
इस प्रकार पराशर सरोवर पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यन्त
स्वच्छ सुन्दर और नेत्रों का आदिक है।
"शक्तेः पराशरः श्रीमान् सर्वज्ञस्तपतां वरः।"
-"कूर्म पुराण"
अर्थात - पराशर मुनि "श्री" (ऐश्वर्य, आचरण एवम कीर्ति)
से युक्त, सर्वज्ञ एवम तपस्वियों में श्रेष्ठ हैं।

@मेरुश्रृंग
ब्रह्मनिष्ठोऽतितेजस्वी योगविद्यापरायणः।
ऋषिर्जयति धर्मज्ञः पुण्यश्लोकः पराशरः॥१॥
अर्थात - जो ब्रह्मनिष्ठ (ब्रह्मज्ञान से युक्त) हैं, जो अति तेजस्वी तथा
योगविद्यापरायण हैं, ऐसे धर्मज्ञ एवं पुण्य-कीर्ति वाले ऋषि पराशर की जय हो।
महामुनि पराशर

■ भगवान श्री ब्रह्मर्षि पराशर के 'पवित्र को भी पवित्र करने वाले' प्रमुख आश्रम -

१. कालपी

२. मेरुशृंग

३. बद्रिकाश्रम

४. गङ्गावर्त, नैमिषारण्य

५. काशी (वाराणसी)

६. ब्रह्मक्षेत्र तीर्थ (कुरुक्षेत्र)

७. पराशरसर

८. चन्द्रवन

(१.) श्री पराशर आश्रम - कालपी

【जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत】

【कालपी क्षेत्र यमुना नदी के तट पर बसा है।】

【👉 कालपी क्षेत्र की मुख्य घटना - वेदव्यास भगवान श्री कृष्णद्वैपायन जी का जन्म इसी कालपी नामक क्षेत्र में भगवान पराशर के संयोग से देवी सत्यवती के गर्भ से यमुना नदी के द्वीप पर हुआ था】

■ कालपी का शास्त्रोक्त वर्णन तथा माहात्म्य -

अथान्यदपि माहात्म्यं कालपी संश्रितं विभो ।

बहि सर्वविदां श्रेष्ठ | महादेव । नमोस्तुते ॥१॥

श्री शंकर उवाच -

ततो दक्षिण दिग्भागे शक्ति सूनुः पराशरः।

तपश्चरति लोकानां क्षेमाय नियतव्रतः ॥२॥

तदाश्रममहा पुण्यो नाना मुनिगणावृतः ।

नाना वृक्षलताकीर्णे नाना पुष्पावलीचितः ।

नाना सरोवरापीच नाना पंकज शोभितः ॥३॥

नानारण्यपशुव्रात कृष्णसारादि भूषितः।

सर्वतु सुखदः श्रीमद्रमापति निकेतनः ॥४॥

ददाति स्नानमत्रेण प्रार्थिभ्यो वाँछित फलम्।

भुक्ति-मुक्ति प्रदानृणां महर्षेस्तस्य तेजसा ॥६॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिन्यां यः समाचरेत।

स्नानं दानं तथा ध्यानं वेत्रवत्यां द्विजोत्तम।

अक्षयं फलमाप्नोति मनोभिष्टं न संशयः ॥७॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिन्यां यः प्रयच्छति।

गुड़धेन्वादिदशकं वेत्रवत्यां स मुक्तिभाक् ॥१३॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिन्यामन्नपर्वतान्।

प्रयच्छेत्वेत्रवत्यां यः सवसेद्धासवानिके ॥१४॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिन्यां यः ......

भूमि दद्याद्द्विजाग्राय भवेत्स पृथिवी पतिः ॥१७॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिनी तीरवासिने।

ब्राह्मणाय पुरं दद्यात्स गच्छेद्विष्णु मन्दिरम् ॥१८॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिनी तीरवासिने ।

वैष्णवाय द्विजाग्रामदद्याद्यः स्वर्णपर्वतम् ॥१९॥

इन्द्रत्वं जायते तस्य स्वर्णगोत्रप्रदायिने ।

तत्र भुक्त्वा महाभोगान्तदन्ते पृथिवीपतिः ॥ २०॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिनी तीरवासिने ।

द्विजाग्राय ददात्यश्वं वारुणं पद्माप्नुयात् ॥२१॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिनीतीरवासिने।

दद्याद्दन्तावलं वस्तु कोवेरं पदम्श्नुते ॥२२॥

पराशराश्रमोपान्ते वाहिनी तीरवासिने।

वस्त्र दद्याद्विजाग्राय भवेद्धनपतिः क्षितौ ॥२३॥

#अर्थात -

श्री नारद जी बोले -

हे समस्त ज्ञानियों में श्रेष्ठ श्री महादेव जी आपको सादर नमस्कार है। हे विभो ! अब कृपा कर कालपी से सम्बंधित अन्य माहात्म्य भी कहिये। ॥१॥

श्री शंकर जी बोले -

👉 वहाँ (कालपी) से दक्षिण की ओर दृढ़वती, शक्तिपुत्र श्री पराशर जी लोक-कल्याण की भावना से तपस्या करते हैं। ॥२॥

मुनि जनों से भरा उनका वह परम-पवित्र आश्रम अनेकों वृक्षों, लता और फूलों की पंक्तियों से व्याप्त अनेकों तालाबों के जल तथा नाना प्रकार के कमलों से सुशोभित था। ॥३॥

अनेकों वन्य पशुओं से युक्त तथा कृष्णसायर

हिरणों से सुशोभित वह आश्रम सभी ऋतुओं को देने वाला था। वहाँ श्री रमापति, भगवान विष्णु निवास करते थे। ॥४॥

👉 तुलसी के समूहों से शोभित वह पावन आश्रम पवित्र से पवित्र था अर्थात पवित्र को भी पवित्र करने वाला था। वहां सुन्दर और मनोहर वेतवा नदी बहती है। ॥५॥

👉 वह वेतवा नदी केवल स्नान करने से ही याचकों को मन चाहा फल देती है और वह उन महर्षि के तेज से भोग तथा मुक्ति को देने वाली है । ॥६॥

हे द्विज श्रेष्ठ ! जो मनुष्य श्री पराशर जी के आश्रम के निकट बहने वाली वेतवा में स्नान, दान तथा ध्यान करता है वह निश्चय ही मन चाहा अक्षय फल पाता है। ॥७॥

पराशर जी के आश्रम के निकट बहने वाली वेतवा नदी में जो मनुष्य गुड़ आदि की दश गायें दान करता है, वह मुक्ति का भागी होता है। ॥१३॥

जो मनुष्य यहां पर वेतवा में अन्न पर्वतों का दान करता है, वह इन्द्र के समीप निवास करता है।

जो मनुष्य यहां पराशर आश्रम के निकट बहने वाली नदी के किनारे बसने वाले ब्राह्मण को गांव दान में देता है वह वैकुण्ठ लोक को जाता है।

जो मनुष्य पराशर जी के आश्रम के समीप बहने वाली श्री वेत्रवती के किनारे रहने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण को पृथ्वी दान करता है, वह भूपति (राजा) होता है। ॥१७॥

जो मनुष्य पराशर जी के आश्रम के समीप बहने वाली नदी के किनारे बसने वाले ब्राह्मण को पुर दान में देता है, वह विष्णु मन्दिर में स्थान प्राप्त करता है। ॥१८॥

जो मनुष्य पराशर जी के आश्रम के समीप बहने वाली नदी के किनारे रहने वाले वैष्णव ब्राह्मण को ग्राम दान करता है; और ॥१९॥

जो पुरुष यहां श्रेष्ठ वैष्णव ब्राह्मण को सोने का पर्वत दान करता है, उस स्वर्ण पर्वत दान करने वाले को इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है। वह वहाँ बड़े-बड़े भोगों को भोगकर अन्त में राजा होता है । ॥२०॥

जो मनुष्य पराशर जी के आश्रम के समीप बहने वाली नदी के किनारे यहां के निवासी को सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण को घोड़ा दान देता है, वह वरुण पद पाता है। ॥२१॥

जो मनुष्य यहां पराशर जी के आश्रम के निकट बहने वाली नदी के किनारे बसने वाले ब्राह्मण को हाथी दान देता है, वह कुबेर पद पाता है। ॥२२॥

जो मनुष्य यहां पराशर आश्रम के निकट बहने वाली नदी के किनारे बसने वाले ब्राह्मण को वस्त्र दान में देता है, वह धनपति हो जाता है। ॥२३॥

(२.) श्री पराशर आश्रम - मेरुशृङ्ग

【साईबेरिया (उत्तर कुरू), रशिया】

【👉 मेरुशृङ्ग की मुख्य घटना -

१. मेरुशृङ्ग पर भगवान शिव के अंशावतार श्री शुकदेव ऋषि - शुक महर्षि का जन्म हुआ था।

२. मेरुशृङ्ग पर भगवान पराशर ने अपने पौत्र शुकदेव ऋषि को #पराशर_उपपुराण सुनाया था।】

मेरुशृंङ्गे समासीनं संसारोदधितारकम्।

शुकः प्रणम्य सर्वज्ञं श्रीपराशरमादरात् ॥२॥

- पराशरोपपुराणम्

#अर्थात - शुक महर्षि संसार रूपी समुद्र से तारने वाले मेरु पर्वत के शिखर पर विराजमान सर्वज्ञ श्री पराशर जी के पास गए तथा उनको आदर सहित प्रणाम किया।

- भगवान पराशर के निवास स्थान मेरु-शृङ्ग का माहात्म्य -

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।

वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥

#अर्थात - मैं (ग्यारह) रुद्रों में शंकर हूँ और यक्ष तथा राक्षसों में धनपति कुबेर (वित्तेश) हूँ; (आठ) वसुओं में अग्नि हूँ तथा शिखर वाले पर्वतों में #मेरु हूँ।

- श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय -१०

■ 👉 मेरुशृंग की भूगौलिक स्थिति -

◆ उत्तरी ध्रुव के निकटवर्ती प्रदेश को ही प्राचीन साहित्य में विशेषत: रामायण और महाभारत में उत्तर कुरु कहा गया है और यही आर्यों की आदि भूमि थी।

◆ ऐतरेय ब्राह्मण में उत्तर कुरु को हिमालय के पार माना गया है और उसे राज्यहीन देश बताया गया है- 'उत्तरकुरव: उत्तरमद्राइति वैराज्या यैव ते।'

◆ 'वहां से आगे जाने पर उत्तम समुद्र मिलेगा जिसके बीच में सुवर्णमय सोमगिरि नामक पर्वत है। वह देश सूर्यहीन है किंतु सूर्य के न रहने पर भी उस पर्वत के प्रकाश से सूर्य के प्रकाश के समान ही वहां उजाला रहता है।' -(रामायण)। उत्तरी ध्रुव पर कुछ इसी तरह की छटा रहती है।

◆ महाभारत सभा पर्व में भी उत्तर कुरु को अगम्य देश माना है। बाणभट्ट ने अपने ग्रंथ 'हर्षचरित' में भी इस स्थान का जिक्र किया है।

◆ भीष्म पर्व के 7वें अध्याय में धृतराष्ट्र ने संजय से कहा कि मेरू के उत्तर तथा पूर्व के भाग में जो कुछ है, उसका वर्णन करो। संजय ने कहा कि नीलगिरि से दक्षिण और #मेरू से उत्तर के भाग में उत्तर कुरुवर्ष है। 👈 उत्तर कुरु के लोग सदा निरोगी और प्रसन्नचित्त रहते हैं। वे कलाब्ज वृक्ष का रस पीकर सदा जवान बने रहते हैं। यहां रहने वाले कुरुओं को भारत में उत्तर कुरु कहा गया।

◆ ब्रह्माजी से उत्पन्न स्वायंभुव मनु के दो पुत्र उत्तानपाद और प्रियव्रत थे। प्रियव्रत से अग्नीघ्र हुए। अग्नीघ्र जम्बू द्वीप के सम्राट थे। अग्नीघ्र के 9 पुत्र हुए- नाभि, किम्पुरुष, हरिवर्ष, इलावृत, रम्य, हिरण्यमय, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल। राजा आग्नीध ने उन सब पुत्रों को उनके नाम से प्रसिद्ध भूखंड दिया।

◆ उक्त 9 पुत्रों में से एक कुरु को अग्नीघ्र ने अंटार्कटिका से लगा इलाका दिया था। पुराणों के अनुसार चतुर्द्वीपी भूगोल के अनुसार धरती के मध्य मेरू पर्वत के उत्तर की समस्त भूमि उत्तर कुरु कहलाती है। 👈 👉 मेरू के दक्षिण में भारत है और उत्तर में रशिया। उत्तर कुरु अर्थात पामीर के पठार से उत्तरी ध्रुव तक का सारा भू-भाग अग्नीघ्र के पुत्र कुरु का था। पामीर के उत्तर में चीनी तुर्किस्तान का भूखंड है। वह सब और उसके उत्तर में #साइबेरिया की जो विस्तृत भूमि है वह सब कुरु के अधीन थी। 👈 उनकी भूमि के पास अंटार्कटिका का महासागर है।】

(३.) श्री पराशर आश्रम - बद्रिकाश्रम

【बद्रीनाथ, गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत】

■ बद्रिकाश्रम का शास्त्रोक्त वर्णन तथा माहात्म्य -

◆ तपोनिधि, तपोमूर्ति भक्तवत्सल पराशर का आश्रम - बद्रिकाश्रम

ततस्ते ऋषयः सर्वे धर्मतत्वार्थकांक्षिणः ।

ऋषिं व्यासं पुरस्कृत्य गता बदरिकाश्रमं ॥५॥

नानापुष्पलताकीर्णम् फलपुष्पैरलंकृतम्।

नदिप्रस्त्रवणोपेतं पुण्यतीर्थोपशोभितम् च॥६॥

मृगपक्षिनिनादाढ़यं देवतायनावृतम् । यक्षगन्धर्वसिद्धैश्च नृत्यंगीतैरलंकृतम् ॥७॥

तस्मिन्नृषिसभामध्ये शक्तिपुत्रं पराशरम्।

सुखासीनं महातेजा मुनिमुख्यगणावृतम् ॥८॥

कृतांजलिपुटो भूत्वा व्यासस्तु ऋषिभि: सह।
प्रदक्षिणाभिवादैश्च स्तुतिभि: समपूज्यत्॥९॥

#अर्थात - तब धर्म के तत्व की अभिलाषा करने वाले वह सम्पूर्ण ऋषि यह सुनकर श्री व्यास जी को आगे कर #बदरिकाश्रम को गये। 👉 यह आश्रम अनेक भाँति पुष्पों की लताओं से पूर्ण, फल-पुष्पों से शोभायमान, नदी और झरनों से विभूषित, पवित्र तीर्थों से शोभायमान, मृग और पक्षियों के शब्द से शब्दायमान, देवमन्दिरों से आवृत, यक्ष और गंधर्वों के नृत्यगान से शोभायमान, और सिद्धगणों से अलंकृत था। 👈 उस आश्रम में शक्ति ऋषि के पुत्र मुनिवर पराशर प्रधान-प्रधान मुनियों से युक्त होकर

ऋषियों की सभा में सुखपूर्वक बैठे थे। इस समय में व्यास जी ने ऋषियों के साथ जाकर हाथ जोड़कर उनकी प्रदक्षिणा कर प्रणामपूर्वक स्तुति करके पुजन किया।

- पराशर स्मृति

(४.) श्री पराशर जन्मस्थली व आश्रम - गङ्गावर्त, नैमिषारण्य

【सीतापुर, उत्तर प्रदेश, भारत】

【👉 नैमिषारण्य की मुख्य घटना - इस क्षेत्र के गङ्गावर्त नामक स्थान पर स्थित वसिष्ठ आश्रम में महर्षि शक्ति के संयोग से देवी अदृश्यन्ती के गर्भ से ब्रह्मर्षि पराशर का जन्म हुआ था।】

■ नैमिषारण्य का शास्त्रोक्त वर्णन तथा माहात्म्य -

(क) भगवान पराशर के पवित्र जन्मस्थान गङ्गावर्त, नैमिषारण्य का शास्त्रोक्त वर्णन -

★ पद्मपुराण के अनुसार -

गच्छतो धर्मचक्रस्य यत्र नेमिर्विशीर्यते।

पुण्यः स देशो मंतव्य इत्युवाच स्वयं प्रभुः ॥८॥

उक्त्वा चैवमृषीन्सर्वानदृश्यत्वमगात्पुनः।

गंगावर्तसमाहारो नेमिर्यत्र व्यशीर्यत ॥९॥

ईजिरे दीर्घसत्रेण ऋषयो नैमिषे तदा।

तत्र गत्वा तु तान्ब्रूहि पृच्छतो धर्मसंशयान् ॥१०॥

अर्थात - यह धर्ममय चक्र यहाँ से जा रहा है। जाते-जाते जिस स्थान पर इसकी नेमी जीर्ण-शीर्ण होकर गिर पड़े, उसी को पुण्यमय प्रदेश समझना।'

उन सभी महर्षियों से ऐसा कहकर भगवान् अन्तर्धान हो गए और वह धर्म-चक्र #नैमिषारण्य के #गङ्गावर्त नामक स्थान पर गिरा। 👈👈 तब ऋषियों ने निमि शीर्ण होने के कारण उस स्थान का नाम 'नैमिष' रखा और नैमीषारण्य में दीर्घकाल तक चालू रहने वाले यज्ञों का अनुष्ठान आरम्भ कर दिया। वहीँ तुम भी जाओ और ऋषियों के पूछने पर उनके धर्म-विषयक संशयों का निवारण करो।

- पद्मपुराण, खण्ड - १ (सृष्टिखण्डम्)

अध्याय - ०१

(ख) वायुपुराण के अनुसार -

भ्रमतो धर्मचक्रस्य यत्र नेमिरशीर्यत।

कर्मणा तेन विख्यात नैमिषं मुनिपूजितम् ॥८॥

यत्र सा गोमती पुण्या सिद्धचारण सेविता।

रोहिणी सुषुवे तत्र ततः सौम्योऽभवत् सुतः ॥९॥

शक्तिर्ज्येष्ठः समभवद्वसिष्ठस्य महात्मनः।

अरुन्धत्याः सुता यत्र शतमुत्तमतेजसः ॥१०॥

कल्माषपादो नृपतिर्यत्र शप्तश्च शक्तिना।

यत्र वैरं समभवद्विश्वामित्रवसिष्ठयोः ॥११॥

अदृश्यन्त्यां समभवन्मुनिर्यत्र पराशरः।

पराभवो वसिष्ठस्य यस्मिन् जातेऽप्यवर्त्तत ॥१२॥

तत्र ते ईजिरे सत्रं नैमिषे ब्रह्मवादिनः।

नैमिषे ईजिरे यत्र नैमिषेयास्ततः स्मृताः ॥१३॥

#अर्थात - जहाँ घूमते-घूमते धर्म चक्र की नेमि विशीर्ण हो गयी और इसलिए जिस मुनिपूजित प्रदेश का अर्थतः नैमिष नाम पड़ा।

★ जहाँ सिध्दों और चारणों से सेवित गोमती है, जहाँ रोहिणी से सौम्य नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

👉 जहाँ महात्मा वशिष्ठ तथा अरुन्धती के अति तेजस्वी सौ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें शक्ति ज्येष्ठ था; जहाँ शक्ति ने राजा कल्माषपाद को श्राप दिया; जहाँ विश्वामित्र और वशिष्ठ में वैर हुआ, #जहाँ_अदृश्यन्ती_से_मुनि #पराशर_पैदा_हुए और जिनके जन्म लेने पर भी वशिष्ठ का पराभव बना रहा, #वहाँ_उस #नैमिषक्षेत्र_में उन ब्रह्मवादियों ने यज्ञ किया। 👈 अतएव वे ऋषि नैमिषेय कहे जाते हैं।

- #वायुपुराण, #पूर्वार्धम्, #अध्याय -२

(ग) कूर्मपुराण के अनुसार -

मुक्त्वा मनोमयं चक्रं संसृष्ट्वा तानुवाच ह।

क्षिप्तमेतन्मया चक्रमनुव्रजत मा चिरम्

यत्रास्य नेमिः शीर्येत स देशः पुरुषर्षभाः ॥७॥

ततो मुमोच तच्चक्रं ते च तत्समनुव्रजन्।

तस्य वै व्रजतः क्षिप्रं यत्र नेमिरशीर्यत।

नैमिशं तत्स्मृतं नाम्ना पुण्यं सर्वत्र पूजितम् ॥८॥

सिद्धचारणसंकीर्णं यक्षगन्धर्वसेवितम्।

स्थानं भगवतः शंभोरेतन्नैमिशमुत्तमम् ॥९॥

अत्र देवाः सगन्धर्वाः सयक्षोरगराक्षसाः।

तपस्तप्त्वा पुरा देवा लेभिरे प्रवरान् वरान् ॥१०॥

इमं देशं समाश्रित्य षट्कुलीयाः समाहिताः।👈

सत्रेणाराध्य देवेशं दृष्टवन्तो महेश्वरम् ॥११॥

अत्र दानं तपस्तप्तं स्नानं जप्यादिकं च यत् ।

एकैकं पावयेत् पापं सप्तजन्मकृतं द्विजाः॥१२॥

अत्र पूर्वं स भगवानृषीणां सत्रमासताम्।

प्रोवाच वायुर्ब्रह्माण्डं पुराणं ब्रह्मभाषितम् ॥१३॥

अत्र देवो महादेवो रुद्राण्या किल विश्वकृत्।

रमतेऽद्यापि भगवान् प्रमथैः परिवारितः॥१४॥

अत्र प्राणान् परित्यज्य नियमेन द्विजातयः।

ब्रह्मलोकं गमिष्यन्ति यत्र गत्वा न जायते ॥१५॥

अर्थात - तब उन्होंने (ब्रह्मा ने) उस (मनोमय) चक्र को छोड़ा और वे ऋषि उस चक्र के पीछे-पीछे चलने लगे। 👉 शीघ्रतापूर्वक जा रहे उस चक्र की नेमि जहाँ (शीर्ण हुई) गिरी, वह स्थान #नैमिष नाम से प्रसिद्ध हुआ और पवित्र तथा सर्वत्र पूजित हुआ।👈 सिद्धों तथा चारणों से परिपूर्ण, यक्षों-गंधर्वों से सेवित यह उत्तम #नैमिष नामक स्थान भगवान #शम्भु का स्थान है।👈 प्राचीनकाल में यहाँ पर तपस्या करके देवताओं, गंधर्वों, यक्षों, नागों और राक्षसों ने श्रेष्ठ वरों को प्राप्त किया था। ॥८-१०॥

👉 (मरीचि, अत्रि, #वशिष्ठ, क्रतु, भृगु तथा अङ्गिरा इन) छः कुलों के ऋषियों ने इस देश में रहते हुए एकाग्रतापूर्वक यज्ञानुष्ठान द्वारा देवेश की आराधना कर महेश्वर का दर्शन किया था।👈 द्विजों ! यहाँ किया गया दान, तप, स्नान तथा जप आदि कोई भी शुभ कर्म अकेला ही सात जन्मों में किये पाप को नष्ट कर उसे पवित्र बना देता है। प्राचीनकाल में इसी तीर्थ में भगवान वायु ने यज्ञ करने वाले ऋषियों को ब्रह्मा जी द्वारा कहे गये ब्रह्माण्डपुराण को सुनाया था। आज भी यहाँ विश्व की सृष्टि करने वाले भगवान महादेव प्रथमगणों से घिरे रहकर रुद्राणी के साथ रमण करते हैं। (अपनी अंतिम अवस्था में) नियमपूर्वक यहाँ निवास कर प्राणों का परित्याग करने वाले द्विज जाति लोग उस ब्रह्मलोक में जाते हैं, जहाँ जाकर पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता। ॥११-१५॥

- कूर्मपुराणम्, उत्तरभाग, अध्याय - ४३

(५) काशी (वाराणसी) -

■ स्कन्द महापुराण के अनुसार -

॥स्कंद उवाच॥

ज्येष्ठेश्वरस्य परितो यानि लिंगानि कुंभज।

तानि पंचसहस्राणि मुनीनां सिद्धिदान्यलम् ॥१॥

पराशरेश्वरं लिंगं ज्येष्ठेशादुत्तरे महत्। 👈

तस्य दर्शनमात्रेण निर्मलं ज्ञानमाप्यते ॥२॥

तत्रैव सिद्धिदं लिंगं मांडव्येश्वरसंज्ञितम्।

न तस्य दर्शनाज्जातु दुर्बुद्धिं प्राप्नुयान्नरः ॥३॥

#अर्थात - स्कन्द (कार्तिकेय) ने कहा - 'ज्येष्ठेश्वर' के चारों ओर पाँच सहस्त्र शिवलिङ्ग हैं। वे सब मुनियों के बड़े ही सिद्धिदायक हैं। ॥१॥

👉 'पराशरेश्वर' नामक एक महालिंग 'ज्येष्ठेश्वर' के उत्तर भाग में विराजमान है, उसके केवल दर्शन-मात्र से ही निर्मल ज्ञान पाया जाता है। ॥२॥ 👈

उसी स्थान पर एक माण्डव्येश्वर नामक दूसरा लिंग भी है, जो सिद्धियों को प्रदान करता है। उसके दर्शन से मनुष्य दुर्बुद्धि नहीं होता। ॥३॥

- स्कन्दपुराण, खण्ड- ४ (काशीखण्ड), उत्तरार्ध, अध्याय: ०६५

◆ 'पराशरेश्वर' - काशीखण्डोक्त काशी का एक ज्ञात महा शिवलिङ्ग

● शिवलिङ्ग का नाम - 'पराशरेश्वर'

● काशी खण्ड अध्याय - ६५, श्लोक संख्या - ०२

● अवन्तिखण्ड-रेवाखण्ड अध्याय - २३१, श्लोक संख्या - २१

● वाराणसी में अवस्थिति -

(१) भदैनी, लोलार्क, बी २/२१

(२) कर्णघण्टा तालाब, व्यासेश्वर के दक्षिण, के ६०/६६, सम्प्रति जल में।

■ भगवान वसिष्ठ द्वारा राजा मान्धाता को 'पराशरेश्वर' नामक अतिउत्तम तीर्थ के माहात्म्य के विषय में बताना -

वसिष्ठ बोले - हे राजन ! जिस जगह 'पराशरेश्वर' नामक अतिउत्तम तीर्थ है, वहां जाओ। वहां पर प्राचीन काल में महान् 'पराशर' नामक ऋषि राक्षसों के नाश हेतु अग्नि में लगातार आहुति दे रहे थे। उनको अभिचार-मारण युक्त यह काम करते देखकर मैं आदरपूर्वक 'पराशर' से इस प्रकार बोला - ॥१-२॥
हन्ता त्राता न कस्यापि कश्चिदस्तीहनिश्चितम् ।

यतः स्वकृतभुग्लोके नरोनित्यं न संशयः ॥३॥

#अर्थात - हे मुनि ! इस जगत में कोई किसी को मारने में समर्थ नहीं है तथा न ही कोई किसी की रक्षा करने में समर्थ है। किये गये कर्मों का फल मनुष्य को भोगना ही पड़ता है, इसमें कोई संशय नहीं। ॥३॥

वसिष्ठ बोले - हे राजन् ! पराशर के इस प्रकार कहने पर मैंने नम्रतापूर्वक उन तेजस्वी शक्तियों को प्रणाम करके इस प्रकार कहा - हे मातृ शक्तियों ! आप प्रसन्न होकर ऐसा कार्य करें जिसका आश्रय करके करोड़ों दैत्य चिन्ता रुपी ज्वर से मुक्त हो जाये। ॥१०-१२॥

देवियां बोलीं - हे ऋषि ! आपके वचन से हम राक्षस कुल के नाश करने के कर्म से विरक्त हुए पर अब से हम यहीं इस स्थान पर निवास करेंगी जिससे हमको शंकर का सान्निध्य प्राप्त होगा। ॥१३॥

वसिष्ठ बोले - इस प्रकार से दिव्य शक्तियों के वचन सुनकर पराशर बोले। ॥१४॥

पराशर बोले - हे देवियों ! आपके स्नेह युक्त वचनों को सुनकर मैं संतुष्ट हूं और अब यहां पर भगवान शंकर की उपासना करूंगा। 👉 आप सभी दिव्य शक्तियों मेरे आश्रम में ही निवास करे। ॥१५॥

पराशर बोले - हे देवेश ! जो आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो सभी दिव्य मातृ शक्तियों के साथ यहीं निवास करें। ॥२७॥ 👈

महादेव बोले - हे तपोधन ! तेरी भक्ति के कारण यह स्थान निश्चय ही सभी मातृ शक्तियों के साथ मेरे रहने योग्य है। ॥ २८॥ 👈

एकाग्रमनसोभूत्वा ये नमिष्यन्ति मामिह।

नतेषां भयकारिण्यः कदाचिदद्यमयातनाः ॥२९॥

#अर्थात - जो मनुष्य इस स्थान पर एकाग्रचित से मुझे नमस्कार करेगा उसको किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। जो मनुष्य इस कुण्ड में सावधान होकर स्नान करेगा और माताओं को नमस्कार करेगा, वह सीधा स्वर्गलोक को प्राप्त करेगा, इसमें कोई संशय नहीं। ॥२९-३०॥

देवियाँ बोली - हे पराशर ! जो मनुष्य इस स्थान पर आकर हमारी नित्य पूजा करेगा उनको प्रसन्न होकर हम खूब धन एवं दुर्लभ कीर्ति प्रदान करेंगी। ॥३१॥

अस्मिन्कुण्डे नरः स्नात्वा दृष्टादेवं महेश्वरम्।

अस्यान्द्रक्ष्यति यत्नेन न तस्यास्ति रिपोर्भयम् ॥३२॥

#अर्थात - जो मनुष्य इस कुण्ड में स्नान करके भगवान शंकर के दर्शन करेगा और यत्नपूर्वक हमारे दर्शन भी करेगा, उसको किसी भी प्रकार के शत्रु का भय नहीं रहेगा। 👉 वैशाख मास की चतुर्दशी को पराशर ऋषि के इस आश्रम में शंकर का जो श्रद्धा पूर्वक दर्शन करेगा, वह पुनर्जन्म के बन्धन से मुक्त हो जाएगा। ॥३२-३३॥ 👈

वसिष्ठ बोले - हे नृप ! इस प्रकार कहकर दिव्य शक्तियां और देवों के देव शंकर पराशर ऋषि को उग्र तपस्या का फल देकर अंतर्ध्यान हो गए। ॥३४॥

- श्रीमाल पुराण, अध्याय-६१, पराशरेश महात्म्य

(६.) श्री पराशर आश्रम - ब्रह्मक्षेत्र तीर्थ (कुरुक्षेत्र)

【कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत】

■ ब्रह्मक्षेत्र तीर्थ कुरुक्षेत्र का शास्त्रोक्त वर्णन तथा माहात्म्य -

वसिष्ठश्चैव शक्तिश्च तथैव च पराशरः। 👈

चतुर्थ इन्द्रप्रमतिः पञ्चमस्तु भरद्वसुः ॥१०५॥

षष्ठस्तु मैत्रावरुणः कुण्डिनः सप्तमस्तथा।

एते सप्तर्षयो विप्रा ब्रह्मक्षेत्रनिवासिनः ॥१०६॥ 👈

ब्रह्मक्षेत्रं महातीर्थं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।

कुरुक्षेत्रे पुण्यतमे पितामहनिषेविते ॥१०७॥

देवानां च ऋषिणां च मुनीनां तत्र सङ्गमः।

ब्रह्मणा च कृतं प्रश्नं क्व दृष्टा वायुदेवता ॥१०८॥

ऋषिगणैस्तदा प्रोक्तं न दृष्टो (ष्टा) वायुदेवता।

इति चिन्तयतां तेषामणुमात्रस्तु दृष्टवान् ॥१०९॥

दृष्टं पुरं च तत्राऽऽसीद्वायोर्नाम्ना पुरं परम्।

अष्टादशसहस्त्राणि द्विजाः संस्थापितास्तदा ॥११०॥

ततीर्थं भुवि विख्यातं हनुमान्यत्र जीवितः।

तत्र वै स्थापिता विप्रा वायुना ब्रह्मवादिना ॥११८॥

देवत्रयाणामादेशाद्धर्मसंक्षणाय च।

यत्र रुद्रः स्थिरश्चाऽऽसीद्दिक्षु सर्वासु मूर्तिमान् ॥११९॥

सूर्यकुण्डम च तत्राऽऽसीद्ब्रह्मकुण्डमतः परम्।

रुद्रकुण्डम हरे: कुण्डमेतत्कुण्डचतुष्टयम् ॥१२२॥

नव दुर्गा: स्थितास्तत्र क्षेत्रसंरक्षणाय च।

हरिद्वयं त्रिगुणयेशं तथा यज्ञचतुष्टयम्॥ १२३॥

धर्मशालाऽपि बहुला वायुस्थाने महापुरे।

रत्नावती स्वर्गमयी गङ्गा चामृतवाहिनी ॥१२७॥

कलौ दृषद्वती नाम महापातकनाशिनी।

वायुना स्थापितं ह्येतच्छासनं पापनाशनम् ॥१२८॥

सुवन्दनं वनं तत्र रम्यं राजर्षिसेवितम्।

एतत्स्थानं मया प्रोक्तं सर्वेषां च समासतः ॥१२९॥

#अर्थात - 👉 हे ऋषिगण ! वसिष्ठ, शक्ति, #पराशर, इन्दुप्रमति, भरद्वसु, मैत्रावरुण और कुण्डिन - ये सात ऋषि #ब्रह्मक्षेत्र के निवासी कहे गए हैं। 👈 यह ब्रह्मक्षेत्र तीर्थ लोक पितामह ब्रह्मा द्वारा सेवित परम् पवित्र कुरुक्षेत्र में अवस्थित है, प्राचीन काल में स्वयं ब्रह्मा जी ने इस महातीर्थ का निर्माण किया था।॥१०३-१०७॥

#अर्थात - उस परम पवित्र तीर्थ में एक बार देवताओं, ऋषियों, तथा मुनियों का विराट समगम था। उस अवसर पर ब्रह्मा जी ने यह प्रश्न उपस्थित किया कि वायु देवता कहाँ देखे जाते हैं ? आप लोग बतलाइये। ऋषियों ने कहा, हम लोगों ने तो वायु देवता का दर्शन नहीं किया है। इस प्रकार की बातचीत चल रही थी कि इसी बीच एक अणु दिखलाई पड़ा। वह अणु एक पुर के रूप में परिणत दिखाई पड़ने लगा जिसका वायुपुर नाम पड़ा। उस समय उस विस्तृत वायुपुर में अठारह सहस्त्र ब्राह्मणों का निवास स्थान निर्मित हुआ था।

◆ वह पावन तीर्थ समस्त पृथ्वी मण्डल में विख्यात है, जहाँ पर हनुमान ने जीवन ग्रहण किया था। ब्रह्मवादी वायुदेवता ने उस स्थान पर धर्म की रक्षा के लिए तीनों देवताओं के आदेश से उन ब्राह्मणों की स्थापना की थी। ॥११६-११८॥

◆ उसी स्थान पर भगवान रुद्र स्थायी रूप से सभी दिशाओं में मूर्तिमान रहते हुए अवस्थित रहते हैं। उसी परम पुनीत स्थल में ऐसे भगवान् सूर्य का एक कुण्ड है, उसी के समीप ब्रह्म कुण्ड तथा विष्णु कुण्ड, रुद्र कुण्ड भी है, इस प्रकार ये चार कुण्ड वहाँ विराजमान है। ॥११९-१२२॥

◆ उस पावन क्षेत्र की रक्षा के लिए वहाँ नवदुर्गा स्थित हैं, उनमें से विष्णु की दो, रुद्र की तीन और ब्रह्मा की चार हैं।

◆ वायु के उस महान पुर में धर्मशालाओं की भरमार थी, उसमें सुवर्ण एवं रत्नों से पूर्ण अमृत जलवाहिनी गङ्गा की धारा बहा करती थी। उस पुनीत गङ्गा का नाम कलियुग में दृषद्वती हुआ, जो घोर पाप-समूहों का नाश करने वाली है। पापों को विनष्ट करने वाले उस परम पुनीत क्षेत्र की स्थापना इस प्रकार वायु देवता ने की थी। उसी क्षेत्र में राजर्षियों द्वारा सेवित अति रमणीक सनन्दन नामक वन है। इस प्रकार उस स्थान के विविध तीर्थों का परिचय मैंने संक्षेप में कह दिया।

(७.) श्री पराशर आश्रम - पराशरसर

【पराशर धार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश, भारत】

■ पराशरसर का शास्त्रोक्त वर्णन तथा माहात्म्य -

मुनेपराशरपरिपूरितकमण्डलु परिपूतजलम्।

अनेकशी पराशरकदम्बकृतसन्ध्योपासनम॥

#अर्थात - #पराशर_मुनि ने बारम्बार अपना कमण्डलु भर कर उस (पराशर सरोवर) - के जल को पवित्र किया था। पराशर मुनि ने अनुयायियों (शिष्यों) सहित अनेक बार उसके जल में सन्ध्योपासन किया था।

मलयमिव चन्दन शिशिरवनम्। अतिमनोहरमाहलादनं दृष्टेः, पराशरनाम्ना सरो दृष्टवान्।

#अर्थात - मलयपर्यत में जिस प्रकार शीतल चन्दन वन है, इस सरोवर में भी उसी प्रकार शीतल जल विद्यमान है। इस प्रकार #पराशर_सरोवर पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यन्त स्वच्छ सुन्दर और नेत्रों का आदिक है।

स्वच्छतया मुनिमनोवृत्तिभिरिय सज्जनगुणरिव हरिणलोचनप्रभावभिरिय मुक्ताफला शुभिरिव निर्मितम्,

#अर्थात - अत्यन्त स्वच्छ होने के कारण यह #सरोवर ऐसा प्रतीत होता है मानों तपस्वियों के मन का, सज्जनों के सद्गुणों का, हरिणों की नयन-कान्ति का और मोतियों की किरणों का ही निर्माण किया हो।

👉 पराशर_सरोवर की स्वच्छता वर्णन से ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में जल की स्वच्छता का विशेष ध्यान दिया जाता था, वर्तमान की तरह जल को दूषित नहीं किया जाता था।

प्रतिमानिभेनान्तः प्रविष्ट सकानन शैल-नक्षत्रग्रहचक्रवाल त्रिभुवनमुदिन्न्प डकजेनोदरेण नारायणमिव विधाणम्।

#अर्थात - इस (पराशरसर) - के परिवेश में बहुत से खिले हुए पुष्प एवम् वन, पर्वत, नक्षत्र और ग्रहों से युक्त समस्त त्रिभुवन प्रतिबिम्ब के बहाने से उस (पवित्र पराशरसर) - के भीतर प्रवेश हो गयें हों, ऐसा प्रतीत होता हैं। अतएव #विष्णु जिस प्रकार उत्पन्न पद्म समन्वित उदर द्वारा वन, पर्वत, नक्षत्र और ग्रहों से युक्त त्रिभुवन धारण करते हैं उसी प्रकार #पराशर_सरोवर ने भी मानों त्रिभुवन धारण किया हो। शीत ऋतु में तो ऐसा प्रतीत होता है मानों भगवान शंकर, कैलाश पर्वत से उतरकर बारम्बार पुण्यमयी #पराशरसर में डुबकी मारने के लोभ से चलायमान हो रहे हों।

- #पराशर_सरः_पुण्यं_सरो

(८.) श्री पराशर आश्रम - चन्द्रवन

■ चन्द्रवन का शास्त्रोक्त वर्णन तथा माहात्म्य -

ब्रह्मरक्षस्त्वमापन्ना ह्यासुरं भावमाश्रिताः ।

कोटिसंख्यामिताः सर्वे मानुषाहारतत्पराः॥४३॥

वयं च भ्रममाणाश्च बहुवर्षसहस्त्रकम्।

ततः कदाचित्क्षुधिता दृष्टवन्तो महामुनिम्॥४४॥

पराशरं चन्द्रवने दीप्यमानं स्वतेजसा । तमत्तुकामास्तत्रापि तमोपहतचेतनाः ॥४५॥

तद्दर्शनात्तमः सर्वे ननाश द्विजसत्तमं ।
रामोक्तस्मृतिमापन्नाश्चकृम प्रणतिं मुहुः ॥४६॥

ततः कैलासमासाद्य मुक्ताः सर्वे कुयोनितः ।

लक्षद्वयं वयं ह्यत्र मुक्तास्तत्कृपया द्विज ।

वैकुंठं गन्तुमारब्धाः स्वस्ति तेऽस्तु महामते ॥४७॥

#अर्थात - करोड़ों की संख्या में हम सब ब्रह्मराक्षस होकर असुर योनि को प्राप्त हो गए तथा मनुष्यों को खाने लगे। ॥४३॥

👉 इस प्रकार हज़ारों वर्षों तक भ्रमण करते हुए भूख से व्याकुल हमने कभी #महामुनि_पराशर को देखा। ॥४४॥ 👈

वे #पराशर_मुनि चन्द्रवन में अपने तेज से देदीप्यमान हो रहे थे। तमोगुण से विनष्ट चेतना वाले हम लोगों की उन #पराशर_मुनि को भक्षण करने की इच्छा हुई। ॥४५॥

हे द्विजसत्तम ! उनके दर्शन से हमारा अज्ञान रूपी अन्धकार नष्ट हो गया। 👈👈 हमें परशुराम की उक्ति का स्मरण हो गया और बारम्बार हमने उन्हें प्रणाम किया। ॥४६॥ 👈

उसके पश्चात् कैलाश में आकर हम सबको राक्षस योनि से मुक्ति मिल गई। उनकी (पराशर मुनि की) कृपा से, हे विप्र ! हम दो लाख ब्रह्मराक्षस यहाँ वैकुण्ठ जाना आरम्भ कर रहे हैं। हे महामते ! आपका कल्याण होवे। ॥४७॥

- स्कन्द पुराण, केदारखण्ड, अध्याय - ७८

#टिप्पणी - उपरोक्त कथा हमें यह बताती है कि किस प्रकार महात्मा पराशर के मात्र दर्शनों से ही जमदग्निनन्दन परशुराम द्वारा शापित ब्रह्मराक्षसों का कल्याण होता है। किस प्रकार महातपस्वी पराशर के मात्र दर्शन करके ही ब्रह्मराक्षसों को अज्ञान रूपी अंधकार से मुक्ति प्राप्त हुई।